शोध–प्रभा (ISSN : 0974-8946)
(A REFERRED & PEER- REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL)

कालजयी कृति ऋषभायण में वर्णित समसामयिक चिन्तन

डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज

प्रस्तावना :

इस देश की चिन्तन–धारा और संस्कृति को प्रभावित करने वाले महापुरूषों के जीवन–चरित्र को आधार बनाकर अनेक खण्डकाव्य और महाकाव्य लिखे गए हैं किन्तु मानवीय सभ्यता के आदिपुरूष ऋषभ को आधार बनाकर लिखा गया ऋषभायण प्रथम विशिष्ट काव्य है। ऋषभ ने युग–परिवर्तन के समय नई सभ्यता और नई संस्कृति का किस प्रकार सृजन किया, इसका जीवन्त चित्रण इस महाकाव्य में है। सृष्टि का विकास कैसे हुआ? कब समाज–व्यवस्था का सूत्रपात हुआ ? कैसे राजनीति का तंत्र विकसित हुआ? दंडनीति का अनचाहा अभिलेख कब लिखा गया ? मनुष्य ने अकर्मयुग से कर्मयुग में प्रवेश कब किया? इन सारे प्रश्नों को समाहित करने वाला महाकाव्य है–ऋषभायण और इसके प्रणेता 20वीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध दार्शनिक और कवि आचार्य महाप्रज्ञ है।

हिन्दी साहित्य के इस प्रसिद्ध महाकाव्य में वर्णित विषयों पर चर्चा करें, उससे पूर्व हमें इसके काव्यत्त्व पर विचार करना आवश्वक है। यहां विभिन्न विद्वानों द्वारा दिये गये महाकाव्य के लक्षणों के आधार पर ऋषभायण का महाकाव्यत्त्व सिद्ध कर रहे हैं–

संस्कृत साहित्यशास्त्र में 'साहित्य' का पर्यायवाची शब्द, काव्य है। आचार्य भामह ने 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'[प] कहकर, शब्द और अर्थ के सम्मेलन को काव्य माना है। पंडितराज जगन्नाथ ने कहा है कि 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।'[पप] इस परिभाषा में उन्होंने रमणीय अर्थ और शब्द, इन दोनों के द्वारा काव्य में रस, अलंकार और ध्वनि का समन्वय निहित माना है। आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में वाक्यं रसात्मकं काव्यम्[पपप] अर्थात् 'रसात्मक' वाक्य को काव्य कहा है।

इस प्रकार देखा जा सकता है कि युग की आवश्यकता के अनुरूप काव्य की परिभाषा बदलती रही है। निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि जो काव्य के शरीरभूत शब्द और अर्थ, गुण और अलंकारों से सहित, दोषों से रहित तथा काव्य की आत्मा रसात्मकता, आनन्दानुभूति आदि को समेटे हुए हो, वही काव्य है।

भारतीय काव्याचार्यों ने बंधाबंध के आधार पर काव्य के दो भेद किये हैं – प्रबन्ध और मुक्तक, जिसमें से प्रबन्ध के भी दो भेद–महाकाव्य और खण्डकाव्य किये गये हैं। ऋषभायण महाकाव्य नामक भेद के अन्तर्गत परिगणित किया जाता है। महाकाव्य का लक्षण बताते हुए भामह ने कहा है–**सर्गबन्धो महाकाव्यं महतां च महच्च यत्।**[पअ]इसी प्रकार साहित्यदर्पणकार पं. विश्वनाथ ने **सर्गबंधो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः**[अ]कहते हुए महाकाव्य को सर्गबन्ध एवं उसका नायक सन्नायक होने की बात करता है। ऋषभायण महाकाव्य इन दोनों ही शर्तों को पूरा करता है।अतः यह एक उच्चकाटि का महाकाव्य सिद्ध होता है।

ऋषभायण में वर्णित समसामयिक चिन्तन :

मनस्वी कवि महाप्रज्ञ द्वारा प्रणीत इस काव्य में केवल आदि–युग का वर्णन ही होता तो इसका समृद्ध इतिहास और पुराण की आधुनिक भाषा में प्रस्तुति से अधिक मूल्य नहीं होता। कवि ने इस काव्य में वर्तमान युग की ज्वलंत समस्याओं के मूल का स्पर्श भी किया है। इसलिए इस काव्य में युग–चेतना को प्रभावित एवं समाहित करने वाले ज्योतिर्मय स्पंदन हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ने इस महाकाव्य में अनेक विषयों को उद्घाटित किया है, जिनकी वर्तमान संदर्भ में अत्यधिक प्रासंगिकता है। इन विषयों में मुख्य रूप से समाज–व्यवस्था, राज–व्यवस्था, नारी शिक्षा, शोषक और शोषित, सफल शासक और शासन के गुण, राजनीति के मूलमंत्र, त्याग–भावना, पर्यावरण, आत्म–सिद्धान्त एवं अहिंसा धर्म का प्रवर्तन, ऋषभ का संबोध, युद्ध की विभिषिका, हृदय–परिवर्तन, क्षमा की भावना एवं आसक्ति से अनासक्ति आदि प्रमुख है। इन विषयों का अध्ययन करना ही इस शोधालेख का उद्देश्य है।

शोषण का विरोध :

वह व्यक्ति महान होता है, जो दूसरों के पोषण के लिए अपनी शक्ति का नियोजन करता है लेकिन वह व्यक्ति जुगुप्सा का पात्र बनता है, जो अपने पोषण के लिए दूसरों का शोषण करता है। मनीषी कवि ने इस संदर्भ में अमर–बेल का मार्मिक निदर्शन प्रस्तुत करते हुए शोषण का विरोध किया है–

अमरबेल ने आरोहरण कर
किया वृक्ष का शोष
वह कैसा प्राणी जो करता
परशोषण, निज पोष
कितना हाय जुगुप्सित कर्म
लज्जित हो जाती है शर्म।[अप]

सफल शासक और शासन के सूत्र :

महामात्य चाणक्य ने चाणक्यसूत्र में और आचार्य सोमप्रभ ने नीति वाक्यामृत में शासक की योग्यता और शासन की सफलता की सुंदर मीमांसा की है। प्रस्तुत काव्य में महाप्रज्ञ ने ऋषभ के माध्यम से भरत को दिये गये संबोध के द्वारा 'सफल शासक और सफल शासन' इन दोनों का सुन्दर चित्रण किया है–

शासक लेता है जनता से
निग्रहशक्ति उधार
यदि हो सत्ता का अभिमान
शासन हो जाता है म्लान।[अपप]
दुर्बल के प्रति प्रबल पर
कर न सके अन्याय

शासन की यह सफलता
न बने वह व्यवसाय।
अजितेन्द्रिय शासन विफल
अंकहीन ज्यों शून्य
संयत शासक प्राप्त कर
होती धरा प्रपुण्य।
केवल निग्रह नीति से
बढ़ता जन आक्रोश
सिर्फ अनुग्रह नीति से
खो देता नर होश।[अपपप]

राजनीति का मूलमंत्र :

वही शासक और शासन सफल हो सकता है, जो आर्थिक असदाचार में लिप्त नहीं होता, जनता की दुःख–दुविधा को मिटाने के लिए सतत् जागरूक रहता है। जहां आर्थिक असदाचार बढ़ता है, दुःख–दुविधा से पीड़ित जनता के हित की चेष्टा नहीं होती वहां शासन रूग्ण और अप्रीतिकर बन जाता है। इसी शाश्वत् सच्चाई का बोध भगवान ऋषभ ने अपने पुत्र भरत को दिया–

वह संभव बनता सहज
शासक अर्थ अलिप्त
सिंहासन की अर्चना
कर सकता जो तृप्त[पग]
अर्थ लुब्ध यदि सचिव है
पद पद प्रथित अनर्थ
शासक ही शोषक सदा
जल सिंचन है व्यर्थ।
जनता की दुविधा मिटे
शासन का है ध्येय
दुविधा की यदि वृद्धि हो
वह आमयकर पेय।[ग]
चरण–चरण के साथ चले
मन में प्रतिपद संवेदन हो
जनतापी पीड़ा से विगलित

रोम रोम में स्वेदन हो।[गप]

नारी–शिक्षा की महत्ता का प्रतिपादन :

जैन–परम्परानुसार भगवान् ऋषभ के अवतरण से पूर्व न शिक्षा थी और न दीक्षा। मनुज शिक्षा और दीक्षा से शून्य था। ऋषभ ने जनता को शिक्षा से शिक्षित और दीक्षा से दीक्षित किया। असि, मषि और कृषि का प्रवर्तन किया। विद्या, शिल्प, कला, व्यवसाय आदि का प्रशिक्षण दिया। केवल पुरूष को ही नहीं, नारी को भी लिपि और गणित की शिक्षा दी। मनीषी कवि महाप्रज्ञ ने ऋषभ की समाज–व्यवस्था में नारी–उत्थान का विश्लेषण अत्यंत मार्मिक ढंग से किया है–

लिपि गणित की शिक्षा में
नारी को पहला स्थान मिला
कोमलतम अंतर में कोई
परिमल परिवृत पुष्प खिला।
नारी को अधिकार नहीं है
शिक्षा का, यह भ्रांति पली
ऋषभ चरित की विस्मृति से ही
मिथ्या मति विष बेल फली।
पशु पक्षी शिक्षित हो सकते
फिर नारी की कौन कथा?
दीर्घकाल अज्ञान तमस की
झेली उसने मौन व्यथा।
पलता है आवरण, वही जन
शिक्षा का है अधिकारी
जिसे लब्ध मस्तिष्क प्रवरतम
फिर वह नर हो या नारी।[गपप]

कष्ट–सहिष्णुता की भावना :

परिवार, समाज, राज्य– सबका त्याग कर ऋषभ संन्यास के पथ पर चल पड़े। नंगे पैर पदयात्रा, भूमि पर शयन, न भोजन की चिन्ता और न पानी की। केवल आत्म–साक्षात्कार का निर्विकल्प संकल्प। अनगिनत कष्ट सहे पर अविचल रहे। मानसिक संतुलन, समता और प्रसन्नता में कभी न्यूनता नहीं आई। जनता उनके इस तपोबल, मनोबल और आत्मबल के समक्ष प्रणत हो गई। उनकी कष्ट सहिष्णुता सुविधावादी युग के लिए एक चुनौती है। घोर कष्टों में भी सुरभित पुष्प सा जीवन जीवन्त बोध पाठ है। ऋषभ की कष्ट सहिष्णुता जनता के मुख से निःसृत इन पंक्तियों में कितनी सजीव बनी है–

लाख गुना है कठिन कष्ट में
भी मुख पर मुस्कान रहे
नहीं किसी मानव के सम्मुख
व्यथा–कथा की बात कहे।[गपपप]

पर्यावरण संरक्षण पर बल :

वृक्ष और मनुष्य में एक अनबोला सा रिश्ता है। वृक्ष उसके जीवन का आधार बना हुआ है। इतना ही नहीं, बोधि के उदय में श्रेष्ठ वृक्ष निमित्त बनते हैं। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर आदि अनेक महापुरूषों को वृक्ष के परिपार्श्व में विशिष्ट बोधि की उपलब्धि हुई है। पर्यावरण की गहराती समस्या ने आज वृक्षों की उपयोगिता की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया है किन्तु अध्यात्म–चेतना के जागरण में भी वे सहायक बनते हैं, यह तथ्य प्राचीनकाल से ही विज्ञात रहा है–

मानव तरु में रहा अभेद
जुड़ा परस्पर अति संवेद
जीता मानव तरु के साथ
तरु ने भी फैलाया हाथ।
मानव करता तरु से प्यार
तरु उसका जीवन आधार
बोधि उदय में सुतरु निमित्त
निर्मल लेश्या निर्मल चित्त।
वट के नीचे प्रभु का वास
ज्ञान सूर्य का अमल प्रकाश
तीन दिवस का वर उपवास
आत्मा में चैतन्य निवास।[गपअ]

आत्म–सिद्धान्त और अहिंसा धर्म का प्रवर्तन :

भगवान ऋषभ ने आत्मा के सिद्धान्त का बड़ा सटीक प्रतिपादन किया है। धर्मचक्र का प्रवर्तन हो गया और उनकी सार्वभौम धर्मदेशना जनता के हृदय–परिवर्तन की कहानी बन गई–

आत्मा सत्यं शिवं सुन्दरं
आत्मा मंगलमय अभिधान
उपादान है परमात्मा का
संयम है उसका अवदान।[गअ]
कर्म क्रिया का, पुनर्जन्म का

आत्मा से संबंध विशेष
इन चारों पर आधारित हो
मानव का आचार अशेष।
मानवीय आचार–संहिता
का आधार अहिंसा है
शांतिभंग दुःख बीज वपन कर
हंसने वाली हिंसा है।[गअप]

युद्ध की विभिषिका :

ऋषभ के उक्त उपदेश से भाई–भाई के बीच संभावित युद्ध का खतरा टल गया। किन्तु जहां अधिकार की वृत्ति है, स्वामित्व के विस्तार की आकांक्षा है, दिग्विजय का स्वप्न है, वहां युद्ध अनिवार्य है। अठानवें भाइयों के शासन को प्राप्त कर, भरत तृप्त नहीं हुआ। शस्त्रागार के बाहर खड़ा दिव्यचक्र दिग्विजय की अपूर्णता की गाथा गा रहा था। सेनापति सुषेण की इस सूचना ने एक नए युद्ध की तैयारी का संकेत दिया, किन्तु भरत का मानस युद्ध से वितृष्ण हो चुका था। उसने कहा –यह समर की देवी प्राणों की बलि लेकर तृप्त होती है। युद्ध का अर्थ है–'पर' अस्तित्व का अस्वीकार। प्रस्तुत काव्यांश में युद्ध की विभिषिका का वर्णन कवि ने किया है, जो आज सम्पूर्ण विश्व में परिव्याप्त है–

तृप्त होती समर देवी
प्राण का बलिदान ले
यह समर कैसे मनुज को
प्राण का आयाम दे।
निज अहं को पुष्ट करने
की महेच्छा युद्ध है
रक्त रंजित भूमि नर की
क्रूरता पर क्रूद्ध है।
युद्ध पर अस्तित्व का
प्रत्यक्ष अस्वीकार है
तंत्र है परतंत्रता का
सृष्टि का संहार है।
चाहते हो यदि भलाई
मनुज की, संसार की
शस्त्र बस शोभा बढ़ाए
स्वस्ति शस्त्रागार की।[गअपप]

हृदय–परिवर्तन :

बहन के प्रतिबोध के बाद बाहुबलि की चिन्तन धारा बदल गई, दिशा बदल गई। भाई को जीतने की चाह बुझ गई। अपने आपको जीतने की चाह प्रबल बन गई। आवेश की जगह शांति की सरिता प्रवाहित हो गई। परिवर्तन की यह गाथा त्याग के महत्त्व का जीवन्त हस्ताक्षर बन गई। आज के युग में हृदय–परिवर्तन की अत्यन्त आवश्यकता है। यह बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान बन सकता है–

हंत! हंत! आवेश क्लेश के
आवरणों का सरजनहार
बंधु बंधु के बीच कलह का
यही बीज है, यही प्रसार।[गअपपप]
शून्य में उभरा प्रवर स्वर
त्यागही सुलझा सकेगा
युद्ध की इस अग्नि को यह
त्याग नीर बुझा सकेगा
स्वार्थ–विष संव्याप्त जग में
त्याग ही तो अमृत फल है।[गपग]

क्षमा की भावना का प्रतिपादन :

बाहुबलि के इस अभिनिष्क्रमण के प्रति भरत प्रणत हो गया, जो कुछ क्षण पहले भाई को मारने के लिए उद्यत था, वह क्षमा की याचना करने लगा। अपराध–बोध से ग्रस्त भरत का आत्म निवेदन त्याग की यशोगाथा बन गया। आज समाज में क्षमा की भावना का अत्यधिक अभाव है। लेकिन आचार्य महाप्रज्ञ ने क्षमा की भावना को महत्त्वपूर्ण मानते हुए आज के युग में क्षमा की प्रासंगिकता को स्पष्ट किया है–

है किया अपराध मैंने
युद्ध भाई से लड़ा है
विजय का वरदान लेकर
यह हिमालय सा खड़ा है
हे क्षमासिन्धो! क्षमा दो
अबक्षमा की ही शरण है।[गग]

ऋषभ का संबोध :

ऋषभ का संबोध पाकर अठानवें पुत्र संबुद्ध बन गए। भाई भरत से युद्ध का विचार त्याग, वीतराग पथ पर चलने का संकलप ले लिया। इस संदर्भ में ऋषभ का वह संबोध आज भी तृष्णाकुल

मनुष्य के लिए पाथेय बना हुआ है–

सबुज्झह किं नो नो बुज्झह
आंको तुम इस क्षण का मूल्य
नृप पद दुर्लभ बोधि सुदुर्लभ
क्या मणि मणि सब होते तुल्य।
एक बड़ा आधार बोधि का
भाई–भाई में संघर्ष
समाधान केवल उदारता
बन सकता है यह आदर्श।[गगप]
भाई–भाई में संगर की
गायेगा हर युग गाथा
सोचो कैसे भावी पीढ़ी
का होगा ऊंचा माथा।
अंतिम परिणति महासमर की
होती समझौता या संधि
नहीं वैर से आग बुझेगी
जल कृशानु का है प्रतिबंधि।[गगपप]
मेरा राज्य विराट् अलौकिक
जहां न इच्छा का लवलेश
युद्ध और संघर्ष विवर्जित
नहीं क्लेश का कहीं प्रवेश।
इस सुराज्य में बन जाता है
जो अबंधु वह सहसा बंधु
लोक राज्य की महिमा देखो
कैसे बनता बंधु अबंधु।[गगपपप]

आसक्ति से अनासक्ति की ओर प्रस्थान :

जहां अनासक्ति होती है, वहां बंधन कैसे होगा ? व्यक्ति को बांधती है आसक्ति। अनासक्ति मुक्ति का पथ है, दर्शन है। भरत ने इस सच्चाई का साक्षात्कार किया और उसे मुक्ति का सूत्र उपलब्ध हो गया–

आत्मा का साक्षात् हुआ है
उदित हुआ है केवल ज्ञान
सहज साधना सिद्ध हुई है
अनासक्ति का यह अवदान।
छूट गया साम्राज्य सकल अब
नहीं रहा जन का सम्राट
टूट गए सीमा के बंधन
प्रगट हुआ है रूप विराट।[गगपअ]

समस्या, दुःख, अशांति और तनाव से मुक्ति ही विराट् की उपलब्धि है। इसमें सुख, समाधि, शांति और समत्व की चेतना का जागरण होता है। इस प्रकार आचार्य महाप्रज्ञ ने इस काव्य में उक्त विषयों का बहुत ही तार्किक रूप से वर्णन किया है, जो आज के संदर्भ में भी पूर्णतः प्रासांगिक है।

ऋषभ, भरत और बाहुबलि की यह मर्मस्पर्शी गाथा जीवन के ऊर्ध्वारोहण की गाथा है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने इसमें भारतीय संस्कृति, दर्शन और अध्यात्म चेतना का सुन्दर एवं मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। इसमें केवल अतीत का यशोगान ही नहीं है, वर्तमान की समस्याओं का समाधान भी है। समाज, धर्म, राजनीति को नई दृष्टि एवं नई दिशा देने वाला यह ग्रंथभारतीय चेतना का दर्पण है। मनस्वी कवि महाप्रज्ञ का यह मौलिक सृजन भारतीय मनीषा को प्रभावित करेगा, उसको नया आलोक और नई दृष्टि देगा।

संदर्भ–सूची :

[प]. काव्यालंकार – भामह, 1/16

[पप]. रसगंगाधर – पं. जगन्नाथ, 1/1

[पपप]. साहित्यदर्पण – पं. विश्वनाथ, 1/67

पअ.काव्यालंकार, 1/19

अ. साहित्यदर्पण 6/315

[अप]. वही, पांचवां सर्ग, पृ. 80

[अपप]. वही, पांचवां सर्ग, पृ. 87

[अपपप]. वही, पांचवां सर्ग, पृ. 88

[पग]. वही, पांचवां सर्ग, पृ. 88

[ग]. वही, पांचवां सर्ग, पृ. 89

[गप]. वही, पांचवां सर्ग, पृ. 90

[गपप]. ऋषभायण, चौथा सर्ग, पृ. 67

[गपपप]. वही, सातवां सर्ग, पृ. 132

[गपअ]. वही, आठवां सर्ग, पृ. 141

[गअ]. वही, नौवां सर्ग, पृ. 158

[गअप]. वही, नौवां सर्ग, पृ. 159

[गअपप]. वही, चौदहवां सर्ग, पृ. 220–221

[गअपपप]. वही, अठारहवां सर्ग, पृ. 288

[गपग]. वही, अठारहवां सर्ग, पृ. 290

[गग]. वही, अठारहवां सर्ग, पृ. 291

[गगप]. वही, बारहवां सर्ग, पृ. 197

[गगपप]. वही, बारहवां सर्ग, पृ. 201

[गगपपप]. वही, बारहवां सर्ग, पृ. 200

[गगपअ]. वही, अठारहवां सर्ग, पृ. 301

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. ऋषभायण – आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्व भारती, लाडनूं, 1999
2. आदिपुराण – जिनसेनकृत, सम्पा. पन्नालाल, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1965
3. काव्यप्रकाश – आचार्य मम्मट, चौखम्बा प्रकाशन, बनारस,1955
4. काव्यानुशासन – हेमचन्द्र, नि.सा.प्रे., बम्बई, 1934
5. काव्यालंकार – भामह, सम्पा. डॉ. बैचेन झाँ, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1982
6. रसगंगाधर – पंडितराज जगन्नाथ, टीकाद्वय सहित, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1983
7. साहित्यदर्पण – विश्वनाथ, विमल टीका–शालिग्राम शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, 1961